भारत फ्रांस संबंधों के बढ़ते कदम

Dr.Rinku

भारत फ्रांस संबंध ऐतिहासिक रुप से हमेशा मैत्रीपूर्ण ही रहे तथा प्राचीन काल से दोनों देशों ने संबंधों को बढ़ावा दिया है परंतु 1998 के बाद से भारत तथा फ्रांस बेहद करीबी दोस्त माने जा रहे हैं। भारत के परमाणु परीक्षण के समय फ्रांस एकमात्र देश था जो भारत के साथ खड़ा रहा जबकि अन्य देशों ने भारत पर अलग-अलग तरह की प्रतिबंध लगा दिए थे। इस मुश्किल समय के दौरान फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति जाक शिराक ने न केवल भारत यात्रा की बल्कि आर्थिक प्रतिबंधों को हटाने के लिए खुलेआम अपील भी की। तब से लेकर अब तक भारत फ्रांस संबंध सुनहरे अक्षरों में अपने रिश्ते को लिख रहा है। साल 2017 से प्रधानमंत्री मोदी चार बार फ्रांस की यात्रा कर चुके हैं परंतु इस बार की यात्रा बड़ी खास रही। प्रधानमंत्री मोदी को फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान "ग्रेड क्रॉस ऑफ लीजन ऑफ ऑनर"से सम्मानित किया गया जो कि फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक तथा सैन्य सम्मान है। प्रधानमंत्री की चौथी यात्रा भारत फ्रांस रिश्ते की 25 वीं वर्षगांठ को दर्शाता है। फ्रांस इस समय भारत का दूसरा सबसे बड़ा रक्षा सहयोगी देश है। फ्रांस के बैस्टिल डे परेड पर भारतीय सेना की भागीदारी 100 साल पुरानी है। भारतीय रक्षा मंत्रालय के अनुसार 1.3 मिलियन से अधिक भारतीय सैनिकों ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया। भारतीय सैनिकों ने फ्रांस के सैनिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध किया । भारत तथा फ्रांस दोनों चीन के बढ़ते प्रभाव को सीमित करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं । फ्रांस ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिंद महासागर क्षेत्र में क्वाड देशों भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान तथा ब्रिटेन की नौ सेनाओं के साथ बहुपक्षीय युद्ध अभ्यास "ला पेरोस" का नेतृत्व भी किया। इसके साथ भारत फ्रांस के बीच युद्ध पोतों को हिंद महासागर में एक दूसरे के नौसैनिक स्टेशन तक पहुंचने की अनुमति जैसे रणनीतिक समझौते चीन के विस्तारवादी नीति पर अंकुश लगाने के लिए कारगर साबित होंगे। हिंद प्रशांत महासागर में शांति व स्थिरता की जिम्मेदारी को समझते हुए दोनों देश ने अगले 25 वर्षों के संबंधों का एक रोड मैप "क्षितिज 2047" नाम से जारी किया। फ्रांस से भारत को मिलने वाली तकनीक मेक इन इंडिया

कार्यक्रम में सहायक है इससे हमारी क्षेत्रीय सुरक्षा को भी सदृढ़ता मिल रही है। दोनों देश पहले की अपेक्षा अब ज्यादा करीब है। इसका प्रमाण हमें इस बात से मिलता है कि अब फ्रांस में भारतीय छात्रों को लंबी अवधि का वीजा मिलेगा तथा भारत में राष्ट्रीय संग्रहालय के विकास में भी फ्रांस की भागीदारी होगी।

फ्रांस तथा भारत की संयुक्त हित:

*नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) प्लस की साझेदारी योजनाओं पर भारत तथा फ्रांस एकमत है अब फ्रांस भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया से सीधे संबंध स्थापित करेगा। भारत में भी नाटो को खारिज करते हुए कहा कि "नाटो ऐसा टेंप्लेट नहीं है जो भारत पर लागू होता है"

*फ्रांस एकमात्र ऐसा देश है जिसके साथ भारतीय नौसेना ने संयुक्त अभ्यास किया है। भविष्य की योजनाओं के तहत दोनों देश नौ सेनाओं द्वारा फोर्ड कार तथा टोही के लिए दिल्ली यूनियन न्यू केलेडोनिया और फ्रेंच पोलिने शिया और भारत के अंडमान दीप समूह में फ्रांसीसी अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रों का उपयोग हो सकता है।

*इंडो पेसिफिक में दोनों देश किसी भी क्षेत्रीय सेना संगठन को नहीं लाएंगे।

भविष्य की नीतियां

फ्रांस भारत का तकनीकी साझेदार बन सकता है तथा अंतरिक्ष और परमाणु क्षेत्र में मदद कर सकता है रूसी आक्रमण या अफ्रीकी आतंकवाद में भारत फ्रांस के लिए काफी महत्वपूर्ण हो जाता है। इंडो पेसिफिक फोरम रणनीतिक हितों और द्विपक्षीय सहयोग को सुनिश्चित करने से बेहतर सहायता करने में दोनों देश सक्षम है।

दोनों देश शक्तिशाली हैं एक यूरोप तथा दूसरा एशिया में। दोनों देश एक जैसी अवधारणा रखते हैं तथा स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करते हैं। दोनों देश मिल कर बहु ध्रुवीय दुनिया को साकार करने में सक्षम है अगर दोनों देश मिलकर काम करते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब भारत फ्रांस एक-दूसरे के सबसे बड़े हितैषी होंगे।

About Author

डॉ रिंकू शर्मा
एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी, सहायक प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग,
ज्योतिबा फुले राजकीय महाविद्यालय रादौर यमुनानगर (हरियाणा)

Dr Rinku has completed Ph.D. in Defence Studies from Barkatullah University, Bhopal (M.P.) in 2019, qualified NET in Defence Studies and serving the community as Assistant Professor in Department of Defence Studies, Jyotiba Phule Govt. College, Radaur Yamuna Nagar Haryana. She is NSS Officer and awarded with "Appreciation Certificate" by Sub Divisional Magistrate, Government of Haryana for outstanding work as a NSS Programme Officer on 26 January 2022. She is life member at International Council for Education Research and Training (ICERT) and Life Member of M.D. University Alumni Association, Rohtak. She has presented 30 research papers in National and International Conferences, and published 25 research papers in various journals.